

शैक्षणिक पुस्तकालयों में उपयोगकर्ता संतुष्टि पर पुस्तकालय स्वचालन का प्रभाव**कु. रेखा ताराचंद झलके****ग्रंथपाल, अनिकेत समाजकार्य महाविद्यालय वडसा जि.गडचिरोली****सार**

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों (आईसीटी) के तीव्र विकास ने पुस्तकालय स्वचालन प्रणालियों को अपनाकर शैक्षणिक पुस्तकालयों की कार्यप्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया है। यह शोधपत्र शैक्षणिक पुस्तकालयों में उपयोगकर्ता संतुष्टि पर पुस्तकालय स्वचालन के प्रभाव का परीक्षण करता है, जिसमें प्रदान की जाने वाली सेवाओं की दक्षता, पहुँच और गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया गया है। यह अध्ययन स्वचालित कैटलॉगिंग, संचलन, अधिग्रहण और ओपीएसी (ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटलॉग) प्रणालियों के संदर्भ में उपयोगकर्ता के अनुभवों और अपेक्षाओं का मूल्यांकन करता है। चयनित शैक्षणिक संस्थानों में छात्रों, शिक्षकों और पुस्तकालय कर्मचारियों के सर्वेक्षणों और साक्षात्कारों के माध्यम से आँकड़े एकत्र किए गए। निष्कर्षों से स्वचालन के स्तर और उपयोगकर्ता संतुष्टि के बीच एक मज़बूत संबंध का पता चलता है, विशेष रूप से संसाधनों तक समय पर पहुँच, सामग्री की आसान खोज और बेहतर सेवा वितरण के संदर्भ में। हालाँकि, अध्ययन अपर्याप्त प्रशिक्षण, सिस्टम डाउनटाइम और उपयोगकर्ताओं के बीच डिजिटल विभाजन जैसी कुछ चुनौतियों पर भी प्रकाश डालता है। शोधपत्र का निष्कर्ष है कि जहाँ स्वचालन उपयोगकर्ता अनुभव को महत्वपूर्ण रूप से बेहतर बनाता है, वहीं शैक्षणिक परिवेश में इसके लाभों को पूरी तरह से प्राप्त करने के लिए निरंतर उपयोगकर्ता अभिविन्यास, तकनीकी सहायता और सिस्टम अपग्रेड आवश्यक हैं।

मुख्य शब्द: पुस्तकालय स्वचालन, उपयोगकर्ता संतुष्टि, शैक्षणिक पुस्तकालय, पुस्तकालय सेवाएँ।

परिचय

'सूचना और संचार प्रौद्योगिकी' शब्द पहली बार 1980 के दशक के मध्य में विकसित किया गया था। सबसे पहले, यह निर्णय लिया गया कि मीडिया संचार और दूरसंचार प्रसारण के लिए सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक नेटवर्क, जिनमें पर्सनल कंप्यूटर, वीडियो गेम, मोबाइल फोन, इंटरनेट और इलेक्ट्रॉनिक भुगतान नेटवर्क आदि शामिल हैं। आईटी कंप्यूटर प्रौद्योगिकी और संचार में विकास के साथ विकसित होता है। कंप्यूटर प्रौद्योगिकी सूचना के भंडारण और प्रसंस्करण के लिए डिजिटल रूप में काम करती है। दूसरी ओर, संचार प्रौद्योगिकी डिजिटल सूचना भंडारण और भंडारण को सक्षम बनाती है। इस पद्धति के दौरान, आईटी संचार का अर्थ है विभिन्न तकनीकी अनुप्रयोग। दो शब्द: आईटी शब्द के लिए सूचना और प्रौद्योगिकी का आविष्कार किया गया था। जागरूकता का अर्थ सूचना है और मशीन और संचार का अर्थ प्रौद्योगिकी है। दूसरे शब्दों में, आईटी को 'कंप्यूटर, नेटवर्किंग और आईटी प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों के संयोजन और अनुप्रयोग' (फातिमा और रियासत, 2008) के रूप में वर्णित किया जा सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी कंप्यूटर प्रौद्योगिकी, संचार और दूरसंचार प्रौद्योगिकी जैसी तकनीकों की एक विशाल श्रृंखला को कवर करती है। तकनीकी विकास के साथ आईटी के घटकों को किसी भी संगठन जैसे कंप्यूटर प्रौद्योगिकी, कंप्यूटिंग और दूरसंचार प्रौद्योगिकी में लागू किया जाता है। पुस्तकालय और सूचना विज्ञान के क्षेत्र में आईटी घटकों को जोड़ा जा रहा है, सूचना और सेवा संसाधनों के निर्माण के लिए पुस्तकालय स्वचालन, पुस्तकालय सॉफ्टवेयर और इंटरनेट, नेटवर्क

साझाकरण और पुस्तकालय डिजिटलीकरण के संगठन का भी सुझाव दिया जा रहा है। पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में इन सभी तत्वों को क्रियान्वित किया जाना चाहिए।

स्वचालन की परिभाषा स्वचालन की परिभाषा

पुस्तकालय विज्ञान के विश्वकोश शब्दकोश के अनुसार, स्वचालन वह तकनीक है जो प्रक्रियाओं और प्रणालियों के डिजाइन और विकास से संबंधित है जो उनके संचालन में मानवीय हस्तक्षेप की आवश्यकता को न्यूनतम करती है (ईश्वरी एट अल, 1993)

विश्वकोश अमेरिकाना के अनुसार, स्वचालन को किसी उत्पादन प्रणाली के किसी भी निरंतर एकीकृत संचालन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो उत्पादित वस्तु की मात्रा और गुणवत्ता को विनियमित और समन्वयित करने के लिए संबंधित उपकरणों पर इलेक्ट्रॉनिक कंप्यूटर का उपयोग करता है। स्वचालन यांत्रिक या इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों द्वारा किसी उपकरण प्रक्रिया या प्रणाली का स्वचालित नियंत्रण है जो मानव अंगों या अवलोकन प्रयासों या निर्णय का स्थान लेते हैं (वेबस्टर डिक्शनरी, 1966)।

स्वचालन शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम डी.एस. हार्डर ने 1963 में किया था। उन्होंने 1936 में स्वचालन को प्रगतिशील उत्पादन प्रक्रियाओं के बीच भागों के स्वचालित संचालन के रूप में परिभाषित किया। पुस्तकालय स्वचालन को सरल अर्थों में 'पुस्तकालय संचालन के मशीनीकरण की एक प्रक्रिया' के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो नियमित और दोहरावदार प्रकृति की होती है। पुस्तकालय हाउसकीपिंग संचालन का कम्प्यूटरीकरण, कम्प्यूटरीकरण की प्रबलता को पुस्तकालय स्वचालन के रूप में जाना जाता है।

पुस्तकालय स्वचालन

पुस्तकालयों में, सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा प्रदान किए गए कार्यक्रमों और उपकरणों का उपयोग किया गया है; लाइब्रेरी ऑटोमेशन पहला बड़ा कदम था। यह क्रांति लाता है और पाठकों और पुस्तकालय कर्मचारियों के लिए जानकारी प्रसारित करने और एकत्र करने के लिए अविश्वसनीय समय बचाता है। 1950 के दशक के मध्य से 1980 के दशक तक पुस्तकालय स्वचालित होना शुरू हुआ। ऑटोमेशन पुस्तकालयों में घर के रख-रखाव के लिए कंप्यूटर और संबद्ध माध्यमिक मीडिया जैसे चुंबकीय टेप, ऑप्टिकल और डिस्क ड्राइव आदि के उपयोग को ट्रैक करता है। पाठक को व्यक्तिगत तरीके से और सटीक अवधि में सही, उचित रूप में जानकारी प्रदान करना, पुस्तकालय स्वचालन है पुस्तकालयों का मूल लक्ष्य। पुस्तकालय स्वचालन आसानी से, प्रभावी ढंग से, आर्थिक रूप से और सफलतापूर्वक पुस्तकालय प्रदर्शन देने के लिए पुस्तकालयों के मानदंडों को पूरा करता है। आईटी ने पुस्तकालय में स्वचालन को संभव बनाया। (अहमद, 2009) पुस्तकालय निर्माण पुस्तकालयों के स्वचालन में एक अच्छी परियोजना पर निर्भर करता है। मजबूत गुणवत्ता नियंत्रण इस परियोजना की सफलता का राज है। यह इस परियोजना में शामिल व्यक्तियों और उनके कर्मचारियों के भरोसे की जिम्मेदारी होगी जिसे लाइब्रेरियन समझ और जान सकता है। पुस्तकालयों के स्वचालन को उन लोगों को संबोधित किया जाता है जिन्हें यह सेवाएं प्रदान करता है और जिस तरह से पुस्तकालय चल रहा है उसमें सुधार की आवश्यकता होती है। कोई भी कार्य, जैसे कि उसके निष्पादन के लिए परिवर्तन, प्रबंधन और नियोजन की आवश्यकता होती है, एक साधारण उद्यम नहीं है।

स्वचालन के परिणामस्वरूप संगठन की संरचना, सेवा की आदतें और व्यवसाय में विभिन्न कार्य बदल जाएंगे। वही चुनौतियाँ किसी भी नए स्वचालित संगठन प्रबंधन का सामना करती हैं। दो प्रबंधन मेट्रिक्स इस मामले में डिजाइन या

स्वचालन व्यवस्था के चयन और कार्यान्वयन के परियोजना प्रबंधन और एक उद्यम के चल रहे सेवा जुलूस प्रबंधन हैं। पुस्तकालय स्वचालन प्रणाली की तैयारी और कार्यान्वयन के दौरान एक पुस्तकालयाध्यक्ष एक संगठन में कुछ प्रमुख व्यक्तियों से मूल्यवान सहायता प्राप्त कर सकता है। हालांकि, एक व्यापक समुदाय के अंदर बात करना महत्वपूर्ण है। किसी भी संस्थान को एक समुदाय बनाना चाहिए जो उस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है जहां स्वचालन के संबंध में सिस्टम का प्रदर्शन, प्रबंधन और रखरखाव किया जाएगा। सेट के इस रूप के कई कार्य हैं और कई वर्षों तक इसका उपयोग भी किया जा सकता है। समुदाय विशेष आवश्यकताओं पर सिस्टम के लिए मूल्यवान जानकारी प्रदान करेगा।

यह राजी सुविधाओं की आवश्यकता और व्यवहार्यता के संबंध में दूसरों की टिप्पणियों का आकलन कर सकता है। यह ऑटोमेशन प्रोजेक्ट के लिए जिम्मेदार व्यक्ति के लिए चर्चा बोर्ड के रूप में भी कार्य करता है। किसी संगठन में किसी भी प्रकार के कंप्यूटर सिस्टम की स्थापना के द्वारा गतिविधियों को करने के तरीके, बाहरी इकाइयों और पुस्तकालयों के बीच संबंध और कर्मियों के कार्य को बदल दिया जाता है। कर्मचारी ऑटोमेशन प्रोजेक्ट पर ट्रांसमिशन सिस्टम में नियमित रूप से काम करते हैं। यह संचालित होता है और जानना चाहता है कि यह उनके जीवन को कैसे प्रभावित करता है कि श्रमिकों को एक बार उपकरण का उपयोग करने की आवश्यकता होती है। कंपनी के अंदर कर्मचारी खुद का संचालन करते हैं। यह एक बहुआयामी तंत्र है जिसमें प्रबंधन की आवश्यकता वाले उपयोगकर्ता सेवाएं प्रदान कर सकते हैं।

पुस्तकालय स्वचालन की आवश्यकता

बड़ी मात्रा में डेटा तक संभावित पहुंच बनाने के लिए, सूचना को डिज़ाइन किया गया है। इस तरह की प्रणाली कम्प्यूटरीकृत या मैनुअल हो सकती है। मैनुअल सिस्टम से ज्यादा कंप्यूटर सिस्टम फायदेमंद होते हैं।

पुस्तकालयों की सुस्त प्रक्रियाओं में वे ऊर्जा और समय को कम करते हैं और अपनी पकड़ को तुरंत प्रतिबिंबित करते हैं। खोज के विभिन्न कोणों से भौतिक सीमाओं के कारण पारंपरिक प्रणालियों में यह संभव नहीं है। मानव जीवन के लगभग हर क्षेत्र में आईटी के अनुप्रयोग का महत्व है। वर्तमान में पुस्तकालय जानकारी एकत्र करने, पुनः प्राप्त करने और संप्रेषित करने के लिए उत्पन्न होता है। सामाजिक संस्थाओं की समानता में मानव जीवन नई तकनीक से अधिक प्रभावित हो रहा है।

गोविन्द (2014) के अनुसार पुस्तकालय स्वचालन की आवश्यकताएँ हैं:

- पुस्तकालय संग्रह विकास और प्रिंट, गैर-प्रिंट, दृश्य-श्रव्य, ग्राफिक्स और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जैसे विभिन्न प्रारूपों में सूचना की पहुंच।
- पुस्तकालय संसाधनों और सेवाओं के विकास के लिए।
- सूचना पुनर्प्राप्ति, प्रबंधन और पुस्तकालयों की विभिन्न आवश्यकताएं।
- पुस्तकालयों के आंतरिक कार्यों में कार्य का दुगुना होना और दोहराव की अधिकता।
- प्रौद्योगिकी के विकास के साथ आईटी पुस्तकालयाध्यक्षों के सामने एक चुनौती है।

- पुस्तकालयों में इंटरनेट अनुप्रयोग, नेटवर्किंग के माध्यम से संसाधन साझा करना, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की ऑनलाइन डेटाबेस खोज।
- पुस्तकालय सूचना प्रणाली पारंपरिक है और इसकी सीमाएं हैं।
- संचार प्रौद्योगिकियों का पुस्तकालयों से समाज पर प्रभाव और आशा है।

पुस्तकालय स्वचालन के लाभ

लाइब्रेरी ऑटोमेशन, लाइब्रेरी साइंस रंगनाथन के पांच कानूनों के सुझावों को पूरा करता है। खासकर चौथे सूत्र का सिद्धांत यानी 'पाठक का समय बचाएं'। शर्मा (2015) के अनुसार पुस्तकालय स्वचालन के निम्नलिखित लाभ हैं:

- ठीक नियमों की स्थापना के साथ स्वचालन सॉफ्टवेयर स्वचालित रूप से परिणाम प्रस्तुत करेगा।
- परिसंचरण, स्वचालन के लिए शेष उपयोगकर्ताओं के साथ-साथ कर्मचारियों का भी बहुत समय बचा। यह पुस्तकालय सेवाओं के सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों में से एक है।
- वे सहजता से पुस्तकालय संसाधनों का आरक्षण कर सकते हैं।
- उपयोगकर्ता किसी भी समय कहीं से भी इस प्रणाली की सुविधा के साथ जानकारी खोज सकता है।

उद्देश्य

1. पुस्तकालय स्वचालन के संदर्भ में उपयोगकर्ता संतुष्टि को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों (जैसे, उपयोग में आसानी, गति, पहुँच, सटीकता) की पहचान करना।
2. उपयोगकर्ता के दृष्टिकोण से पुस्तकालय स्वचालन के लाभों और सीमाओं की जाँच करना।
3. शैक्षणिक उपयोगकर्ताओं को प्रदान की जाने वाली पुस्तकालय सेवाओं की गुणवत्ता और स्वचालन के बीच संबंध का विश्लेषण करना।

शैक्षणिक पुस्तकालयों में स्वचालन की आवश्यकता

शैक्षणिक पुस्तकालय किसी भी शिक्षण संस्थान की आधारशिला होते हैं, जहाँ छात्र, शोधार्थी और प्राध्यापक ज्ञान और सूचना प्राप्त करने हेतु निर्भर रहते हैं। जैसे-जैसे ज्ञान का दायरा बढ़ता जा रहा है, वैसे-वैसे इन उपयोगकर्ताओं की सूचना संबंधी आवश्यकताएँ भी जटिल होती जा रही हैं। छात्रों को पाठ्यक्रम से संबंधित पुस्तकों, नोट्स एवं ई-सामग्री की आवश्यकता होती है, वहीं शोधार्थियों को नवीनतम शोध-पत्र, पत्रिकाएँ, डेटाबेस और संदर्भ सामग्री चाहिए होती है। प्राध्यापकों को शिक्षण-सामग्री के साथ-साथ शोध एवं प्रकाशन हेतु अद्यतन जानकारी चाहिए होती है। इन सबकी पूर्ति पारंपरिक प्रणाली के माध्यम से करना अत्यंत समय-साध्य और श्रमसाध्य हो जाता है।

इन जटिलताओं के समाधान के लिए पुस्तकालय स्वचालन आवश्यक हो गया है। स्वचालन न केवल संसाधनों के प्रबंधन को अधिक कुशल बनाता है, बल्कि सूचना की खोज और पहुँच को भी तेज़ करता है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि कोई भी उपयोगकर्ता कुछ ही क्षणों में यह जान सके कि किसी विशेष पुस्तक या संसाधन की उपलब्धता क्या है,

वह किस शेल्फ में है, और उसे कैसे एक्सेस किया जा सकता है। डिजिटल कैटलॉगिंग प्रणाली ने पुस्तक खोजने की प्रक्रिया को बेहद सरल और पारदर्शी बना दिया है।

इसके अतिरिक्त, ऑनलाइन डेटाबेस तक पहुँच, जैसे कि JSTOR, Springer, Scopus, आदि, छात्रों और शोधार्थियों को वैश्विक ज्ञान भंडार से जोड़ता है। RFID (Radio Frequency Identification) प्रणाली पुस्तक निर्गमन एवं वापसी को तेज़, सटीक एवं बिना कतारबद्ध किए पूरा कर देती है, जिससे मानव त्रुटियों की संभावना कम हो जाती है। इसी प्रकार, ई-रिसोर्स एक्सेस और रिमोट लॉगिन सुविधा विद्यार्थियों को परिसर के बाहर से भी पुस्तकालय संसाधनों का उपयोग करने का अवसर देती है, जिससे उनका अध्ययन अधिक लचीला और प्रभावशाली बनता है।

स्वचालन के माध्यम से न केवल पुस्तकालयों की सेवा क्षमता में वृद्धि होती है, बल्कि उपयोगकर्ताओं का अनुभव भी अधिक संतोषजनक, प्रभावी और सहज हो जाता है। इस तरह यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान सूचना-प्रौद्योगिकी युग में शैक्षणिक पुस्तकालयों में स्वचालन कोई विकल्प नहीं, बल्कि अनिवार्यता बन चुका है।

लाइब्रेरी डेटा के प्रकार

डेटा प्रविष्टि कम्प्यूटरीकरण का सबसे महत्वपूर्ण चरण है। एक कंप्यूटर पर ग्रंथ सूची डेटा को हटाने और माउंट करने में योग्य पेशेवरों की सेवाओं की आवश्यकता होगी। पारंपरिक अभिलेखों के मामले में, यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि केवल भौतिक रूप से या पुस्तकालय में पंजीकृत दस्तावेजों को ही कार्यों के लिए ध्यान में रखा जाए। समय की बर्बादी और अनिश्चितता की स्थिति को रोकने के लिए पुस्तकालयों में अनुशासित गतिविधियाँ होती हैं। पुस्तकालय संग्रह में सर्वोत्तम प्रथाओं में सुधार किया गया है; पुस्तक और रिकॉर्ड दोनों को व्यवस्थित किया गया है और ठीक से तुलना की गई है। पुस्तकालयों में डेटा की दो प्रमुख श्रेणियाँ होती हैं।

आमतौर पर पुस्तकालयों को पुस्तकालय स्वचालन के लिए कट-ऑफ तिथि का चयन करना चाहिए। उस तिथि के बाद, परिवर्तनकारी वातावरण में अधिग्रहण अनुभाग से ऐसी पुस्तक प्रविष्टि के लिए सभी नए आगमन पर कार्रवाई की जाएगी और दस्तावेज़ संग्रह, आदेश और अधिग्रहण से निपटा जाएगा। विवरण सॉफ्टवेयर पैकेज में दिए गए अनुसार केवल एक बार दर्ज किया जाएगा। विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिए, उनके विशेष मानदंडों के अनुपालन में, पुस्तकालय के अन्य संबंधित वर्गों पर भी यही बात लागू होती है।

रेट्रो-लुकिंग डेटा उन कागजी रिकॉर्डों को अवनत करता है जो कट-ऑफ तारीख से पहले ही पुस्तकालय में प्राप्त किए जा चुके हैं। सक्रिय पुस्तकालय संग्रहों से संबंधित डेटा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा इस समूह से संबंधित है। स्वचालन के लिए आवश्यकता के रूप में डेटा की इस मात्रा को सिस्टम पर बढ़ाया जाना चाहिए। यह आम तौर पर दो तरह से किया जा सकता है, यानी किताबें और कैटलॉग कार्ड दर्ज करके। नए आगमन के लिए पुस्तक प्रविष्टियाँ दैनिक आधार पर की जाती हैं। सामान्य अभ्यास कैटलॉग कार्डों को पूर्वव्यापी रूप से नवीनीकृत करना है। उच्च शिक्षा पुस्तकालयों के लिए पारंपरिक डेटा रूपांतरण बड़ी चुनौती है। वे आमतौर पर अपने काम के लिए बाहरी संगठनों को बनाए रखते हैं। हालांकि, यह मुख्य रूप से धन के प्रावधान पर निर्भर करता है। पुस्तकों में प्रवेश के लिए कीमतें मामूली अधिक हैं। ग्रन्थवैज्ञानिक विवरण वे पुस्तक प्रविष्टियाँ हैं जिनका चयन करने की आवश्यकता है।

पुस्तकालय स्वचालन का इतिहास

भारतीय सांख्यिकी संस्थान, कलकत्ता भारत में 1955 में कंप्यूटर प्रणाली स्थापित करने वाला पहला संस्थान था, और 1964 में एक स्वदेशी कंप्यूटर विकसित किया। भारत में पुस्तकालय कार्यों में कंप्यूटर का उपयोग पहली बार संभवतः INSDOC द्वारा किया गया था। इसने कंप्यूटर की सहायता से भारतीय वैज्ञानिक और तकनीकी अनुवादकों की सूची तैयार की। INSDOC ने 1973 में बॉम्बे, पुणे में क्षेत्रीय संघ सूचीपत्र शीर्षक से पहला वैज्ञानिक और तकनीकी अनुवादक संघ प्रकाशित किया। 1978 में INSDOC ने रासायनिक सार और INSPEC डेटाबेस के साथ NISSAT परियोजना के रूप में SDI सेवा शुरू की। 1970 के दशक में, IIT, मद्रास के CAN/SDI सॉफ्टवेयर के उपयोग से, कई पुस्तकालयों ने कम्प्यूटरीकृत डेटाबेस तैयार करने का बीड़ा उठाया। NISSAT की पहल और वित्तीय सहायता से कई पुस्तकालय नेटवर्क शुरू किए गए और आज भी कार्यरत हैं। इनमें से उल्लेखनीय नेटवर्क हैं कैलिबनेट (कलकत्ता पुस्तकालय नेटवर्क), डेलनेट (दिल्ली पुस्तकालय नेटवर्क), इनफ्लिबनेट (सूचना एवं पुस्तकालय नेटवर्क), पुणेनेट (पुणे पुस्तकालय नेटवर्क), आदि। कुछ अन्य उल्लेखनीय नेटवर्क हैं निकनेट, इंडोनेट, सेरनेट, ईआरनेट आदि। आजकल, कई संस्थान जैसे डीआरटीसी, आईएनएसडीओसी, डेसीडॉक, निस्साट आदि नियमित प्रायोजित और अंशकालिक पाठ्यक्रमों के माध्यम से पुस्तकालय कार्य में कंप्यूटर अनुप्रयोग का प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं। कंप्यूटर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर की कीमतों में काफी कमी आई है। इन कारणों से भारतीय पुस्तकालयों में कंप्यूटर लोकप्रिय हो गए हैं।

पुस्तकालय स्वचालन का भारतीय परिदृश्य

डेटा भंडारण, त्वरित प्रसंस्करण पहुंच पुनर्प्राप्ति, सूचना के प्रसार की विशाल क्षमता को देखते हुए, हमारे देश के पुस्तकालय और सूचना केंद्र ने इन गतिविधियों के लिए कंप्यूटर का उपयोग करना शुरू कर दिया है। शुरुआत में कंप्यूटर का इस्तेमाल बड़े शैक्षणिक संस्थानों जैसे डीटी, आईआईएम और अन्य राष्ट्रीय संस्थानों जैसे सीएसआईआर, आईएनएसडीओसी, नैसडॉक, डीआरटीसी, डीआरडीओ, बीएआरसी और राष्ट्रीय महत्व के उच्च शिक्षा के अन्य संस्थानों द्वारा किया जाता था। अकादमिक पुस्तकालयों और सूचना केंद्र की स्थिति बहुत खराब थी। जेएनयू, हैदराबाद विश्वविद्यालय, पांडिचेरी विश्वविद्यालय इग्नू जैसे कुछ केंद्रीय विश्वविद्यालयों और पंजाब विश्वविद्यालय मुंबई, कोचीन विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय उस्मानिया विश्वविद्यालय जैसे कुछ राज्य विश्वविद्यालयों और टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज आदि जैसे कुछ डीमड विश्वविद्यालयों को छोड़कर। 1990 के दशक से पहले सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग स्पष्ट नहीं था

स्वचालन के दौरान अपनाई जाने वाली कार्यप्रणाली:

1. प्रत्येक गतिविधि के विभिन्न कार्यों का निर्धारण करें
2. प्रत्येक कार्य के लिए इनपुट आवश्यकताओं (डेटा तत्वों) की पहचान करें।
3. रिकॉर्ड, फ़ाइलों और मीडिया के संदर्भ में इनपुट की पहचान करें, साथ ही फ़ाइलों का आकार भी निर्धारित करें।
4. प्रत्येक कार्य के लिए आवश्यक आउटपुट की पहचान करें।
5. रिकॉर्ड, फ़ाइलों और मीडिया के संदर्भ में आउटपुट की पहचान करें, साथ ही फ़ाइलों का आकार भी निर्धारित करें।

6. प्रोग्रामों का विकास (उपलब्ध हार्डवेयर का उपयोग करके दिए गए इनपुट से वांछित आउटपुट प्राप्त करने के लिए) या
7. कंप्यूटरीकृत की जाने वाली गतिविधियों के कुछ या सभी कार्यों को कंप्यूटरीकृत करने के लिए वाणिज्यिक सॉफ्टवेयर खरीदना।

लाइब्रेरी स्वचालन के घटक

पुस्तकालय सेवाओं को स्वचालित करने में सावधानीपूर्वक योजना बनाना एक महत्वपूर्ण कदम है। पुस्तकालय में स्वचालित गतिविधियाँ शुरू करने से पहले कई बिंदुओं पर विचार किया जाना चाहिए।

- (1) **उद्देश्य:** स्वचालन का पहला घटक इसका उद्देश्य है, वह कारण जिसके लिए पुस्तकालय की गतिविधियों को कम्प्यूटरीकृत किया जाना है। यह उद्देश्य गतिविधियों में स्वचालन को एकीकृत करने और स्वचालन के बाद गतिविधियों के संचालन और प्रबंधन का केंद्र बिंदु होगा।
- (2) **प्रसंस्करण:** दूसरा घटक प्रसंस्करण है, जिसमें वांछित परिणाम या सेवा प्राप्त करने के लिए सूचना सामग्री या अन्य वस्तुओं पर व्यवस्थित और पूर्वनिर्धारित क्रम में चरणबद्ध संचालन शामिल हैं।
- (3) **कंप्यूटर प्रणाली:** तीसरा घटक गतिविधियों का समर्थन करने वाला कंप्यूटर सिस्टम है। सहायक कंप्यूटर एक मेनफ्रेम हो सकता है। इसका आकार स्वचालित किए जाने वाले कार्यों की प्रकृति, कंप्यूटर द्वारा समर्थित कार्यों की संख्या, प्रसंस्करण गतिविधि की अनुमानित मात्रा, मशीन भंडारण में लिखी जाने वाली सूचना फ़ाइलों के आकार और पुस्तकालय के लिए उपलब्ध धन पर निर्भर करता है। कंप्यूटर में निम्नलिखित क्षमताएँ होनी चाहिए:

स्वचालन के क्षेत्र

रंगनाथन के पुस्तकालय विज्ञान के पाँच नियमों के अनुसार, पुस्तकालय के दस्तावेजों के अधिकतम उपयोगकर्ता होने चाहिए। पुस्तकालय और सूचना केंद्रों के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग से पुस्तकालय द्वारा उपयोगकर्ताओं को प्रदान की जाने वाली पुस्तकालय सेवाओं में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। पुस्तकालय स्वचालन

आमतौर पर पुस्तकालय के सभी हाउसकीपिंग कार्यों जैसे अधिग्रहण, सूचीकरण, संचालन और क्रमिक नियंत्रण को कवर करता है। कुछ पुस्तकालयों में, इसका विस्तार पुस्तकालय प्रबंधन प्रणाली तक हो गया है जिसमें ओपीएसी के एसडी-रोम नेटवर्क, डीटीपी, कार्यालय स्वचालन आदि शामिल हैं।

निष्कर्ष

आजकल पुस्तकालय स्वचालन पुस्तकालय व्यवसाय में एक प्रचलित शब्द बन गया है और किसी भी पुस्तकालय के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। एक स्वचालित पुस्तकालय अपने उपयोगकर्ताओं को बेहतर सेवाएँ प्रदान कर सकता है और पुस्तकालय का रखरखाव अधिक सुचारू रूप से कर सकता है, जो एक मैनुअल पुस्तकालय नहीं कर सकता। एक स्वचालित पुस्तकालय प्रणाली में रिकॉर्ड रखने की गतिविधियाँ और विभिन्न रीपोस्ट तैयार करना

बहुत आसान हो जाता है। लेकिन किसी भी पुस्तकालय स्वचालन कार्यक्रम की सफलता उसकी उचित योजना और क्रियान्वयन पर निर्भर करती है। इसलिए पुस्तकालय पेशेवरों को सही दिशा में सही पहल करने की आवश्यकता है।

संदर्भ

- (1) भांजा, एम., और बारिक, एन. (2009) ने KIIT विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित MANLIBNET के 10वें राष्ट्रीय सम्मेलन में पुस्तकालय स्वचालन समस्याएँ और संभावनाएँ विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत किया।
- (2) चोलिन, वी.एस. और प्रकाश, के. (1997, मार्च)। भारत में विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के कम्प्यूटरीकरण और नेटवर्किंग की स्थिति। पटियाला में सूचना प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग पुस्तकालय पर INFLIBNET के शिक्षा और अनुसंधान में पुस्तकालयों के स्वचालन के लिए चौथे राष्ट्रीय सम्मेलन में शोधपत्र प्रस्तुत किया।
- (3) गुप्ता आर.सी., और दास, शिर (1991) ने सीरियल नियंत्रण का कम्प्यूटरीकरण - एक व्यक्तिगत कंप्यूटर का उपयोग करके एक व्यावहारिक दृष्टिकोण। IASLIC बुलेटिन, 36, 17-22।
- (4) झारोटिया, अनिल कुमार और शुक्ला, (2010) भारत में संघ और पुस्तकालय नेटवर्किंग का विकास। जे.के. बिज़नेस स्कूल, गुड़गांव में 19 मार्च 2010 को आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन (ISBN-9788190938709) पृष्ठ 164-176।
- (5) खोटे, नमिता बी., और ब्रिजे, सुनील आर. (2009) बैंगलोर में डेंटल कॉलेज लाइब्रेरी के नेटवर्किंग के पुस्तकालय स्वचालन की संभावना: स्थिति समस्या और संभावना, अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ़ इन्फ़ॉर्मेशन डिसेमिनेशन ऑफ़ टेक्नोलॉजी 5[2]: 77-85।
- (6) गर्ग, सुरेश (2011)। ज्ञान प्रबंधन में आईसीटी की भूमिका। यूनिवर्सिटी न्यूज, एसोसिएशन ऑफ़ इंडियन यूनिवर्सिटी। वॉल्यूम । पी: 01-06 49 (50);
- (7) गीतांजलि (2014)। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण के प्रति सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का प्रभाव। कंप्यूटर अनुप्रयोग और रोबोटिक्स में अनुसंधान अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। वॉल्यूम । 2(6); पी: 47-54 के -
- (8) गदेरी, चिया और महमूदीफ़र, यूसेफ (2015)। पश्चिम अजरबैजान के सार्वजनिक पुस्तकालयों में ज्ञान प्रबंधन प्राप्त करने पर सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव । इंडियन जर्नल ऑफ़ फंडामेंटल एंड एप्लाइड
- (9) घण्टे और देशमुख (2014)। भारत में चयनित पुस्तकालय नेटवर्क की सेवाएं और गतिविधियां । 'मानव संसाधन के विकास के लिए उच्च शिक्षा की प्रासंगिकता' पर अंतःविषय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन। पी: 411
- (10) गोवंडे, एस. एम. (2016)। शिक्षा क्षेत्र में ई-गवर्नेंस का रोल। यूनिवर्सिटी न्यूज, एसोसिएशन ऑफ़ इंडियन यूनिवर्सिटीज। वॉल्यूम । 54 (47); पी: 22-25 -
- (11) हरिनेश्वरन, वी. और नित्यरंदम, के. (2015)। शैक्षणिक पुस्तकालयों में ज्ञान प्रबंधन को लागू करना। यूनिवर्सिटी न्यूज, एसोसिएशन ऑफ़ इंडियन यूनिवर्सिटीज । वॉल्यूम । 53 (22); पी: 15-19